परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण मेवाड़ में

अपूर्व वेला : मंगल उल्लास

१२ मई २०११। तेरापंथ धर्मसंघ के लिए एक ऐतिहासिक अवसर। एकादशम अधिशास्ता का ५०वां जन्मदिन। आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव वर्ष का शुभारंभ। चारों ओर अमाप्य उत्साह। आराध्य की अभिवंदना का महापर्व। देश के विभिन्न प्रान्तों से उमड़ा जन सैलाब। कांकरोली में आयोजित अमृत महोत्सव वर्ष का प्रथम चरण अपूर्व और अलौकिक था।

ब्रह्ममुहूर्त की मंगल वेला में जहां मुनिवृन्द ने अपने आस्थान को वर्धापित किया, वहीं श्रावक समाज भी परम पावन प्रभु का अभिनन्दन कर हर्षान्वित था। उदयपुर से समागत पचास युवकों ने जोशीले जयकारों से वातावरण को गुंजायमान बना दिया। पूज्य आचार्यवर ने मंत्री मुनिश्री आदि रत्नाधिक मुनियों की चरण वंदना की। रत्नाधिक मुनिवरों ने पूज्यवर को साभिवादन वर्धापित करते हुए मंगलभावनाएं अभिव्यक्त कीं। अनायोजित अभिवंदना कार्यक्रम में अनेक मुनियों और श्रावक-श्राविकाओं ने भावपूर्ण प्रस्तुति दी। सरदारशहर के दूगड़ परिवार की महिलाओं ने थाली बजाकर अपने कुल गौरव की अभ्यर्थना करते हुए गीत का संगान किया। सूर्योदय के पश्चात महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्रीजी, मुख्य नियोजिकाजी आदि साध्वियों और समणीवृन्द द्वारा पूज्यवर की अभिवंदना की गई। मुनिवृन्द, साध्वीवृन्द, समणीवृन्द एवं मुमुक्षुवृन्द ने सामूहिक गीतों के संगान के द्वारा परमाराध्य को वर्धापित किया। तेरापंथ महिला मंडल राजनगर ने ५५० बारहव्रती और ग्यारहव्रती श्रावक-श्राविकाओं के संकल्प पत्र श्रीचरणों में उपहृत किए। मंत्री मुनिश्री ने अपनी आन्तरिक भावनाओं को अभिव्यक्ति दी।

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के प्रथम चरण के मुख्य कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः ८.३० बजे पूज्यवर के मंगल महामंत्रोच्चार से हुआ। अमृत महोत्सव के स्वागताध्यक्ष श्री जुगराज नाहर ने 'बेकड्रॉप' का अनावरण किया। स्थानीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री कमलेश बोहरा ने आराध्य की अभ्यर्थना में अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। महिला मंडल कांकरोली ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री चैनरूप चिंडालिया, स्थानीय सभा के अध्यक्ष श्री चन्द्रप्रकाश चोरड़िया, मेवाड़ कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष डॉ. बसंतीलाल बाबेल, स्वागताध्यक्ष श्री जुगराज नाहर और आचार्यवर के संसारपक्षीय भ्राता श्री सुजानमलजी दूगड़ ने अपने भावों को अभिव्यक्ति दी।

तेरापंथ विकास परिषद के महामंत्री श्री संपतमलजी नाहटा, जय तुलसी फाउण्डेशन के मुख्य न्यासी श्री सुरेन्द्र दूगड़, महासभाध्यक्ष श्री चैनरूप चिंडालिया, जैविभाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया, जैविभा मान्य विश्वविद्यालय की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी, अ.भा.तेयुप के अध्यक्ष श्री गौतम डागा, अ.भा.तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती कनक बरमेचा, पारमार्थिक शिक्षण संस्था के अध्यक्ष श्री चंपकभाई मेहता, अणुविभा के अध्यक्ष श्री तेजकरण सुराणा, अणुव्रत शिक्षक संसद के अध्यक्ष श्री भीखमचन्द नखत, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र श्यामसुखा ने अभिनंदन पत्र और संकल्प पत्र पूज्य चरणों में समर्पित किए। श्री कमल दूगड़ ने 'आचार्यों की शृंखला में महातपस्वी आचार्य महाश्रमण' नामक कृति पूज्यवर को उपहृत की।

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव प्रवक्ता मुनि कुमारश्रमण ने अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त किए। समणीवृन्द ने आर्ष श्लोकों का उच्चारण कर आचार्यवर को वर्धापित किया। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी द्वारा रचित अमृत महोत्सव गीत को साध्वीवृन्द ने समवेत स्वरों में प्रस्तुति दी। गीत के दौरान साध्वीप्रमुखाजी ने कलापूर्ण अमृत कलश आचार्यवर को उपहृत किया। आचार्य डालगणी युग के इस कलश पर साध्वी सुनन्दाश्रीजी और साध्वी वंदनाश्री ने कला का सुन्दर निदर्शन प्रस्तुत किया है। आचार्यवर ने साध्वीद्वय

के कलाकौशल की प्रशंसा करते हुए उन्हें अनुग्रहस्वरूप ५१-५१ कल्याणक बख्शीश किए। साध्वी चारित्रयशाजी ने गीत का संगान किया। पूज्य आचार्यवर ने उपस्थित जनसमूह को एक वर्ष के लिए धारणानुसार संकल्प करवाया।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'अनुत्तर समर्पण, अद्भुत विनय और अप्रतिहत पुरुषार्थ के समवाय का नाम है आचार्य महाश्रमण। आपने गुरुनिष्ठा, आज्ञानिष्ठा, संघनिष्ठा और साधनापरक दृष्टिकोण के द्वारा आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ का विश्वास अर्जित किया। इस पावन अवसर पर यही मंगलकामना करती हूं कि युगों-युगों तक जनता को आपसे आध्यात्मिक और नैतिक संबोध मिलता रहे।'

मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी ने आचार्यवर को वर्धापित करते हुए कहा--'आचार्यश्री महाश्रमण की यह प्रथम अर्धशताब्दी अध्यात्म की अर्धशताब्दी है। संघ का सौभाग्य है कि उसे महान नेतृत्व प्राप्त है। इस कालजयी व्यक्तित्व की अग्रिम अर्धशताब्दी और भी महत्त्वपूर्ण हो। आचार्यश्री स्वस्थ रहें और आपका पुनीत मार्गदर्शन जनहित, संघहित, राष्ट्रहित और विश्वहित के लिए प्राप्त होता रहे।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने आचार्यवर की अभिवंदना करते हुए कहा--'आचार्य महाश्रमण ने अपनी जागरूकता एवं दायित्वनिष्ठा से नये-नये शिखरों का आरोहण किया और वहां तक पहुंच गए, जहां लंबी साधना के बाद ही पहुंचा जा सकता है। आचार्यवर साधना के प्रति जितने जागरूक हैं, मानवता की सेवा के लिए भी उतने ही समर्पित हैं। इस मंगल प्रसंग पर यही मंगलकामना करती हूं कि मानव जाति के लिए आश्वास, विश्वास और विकास के आधार बनकर आचार्यश्री युगों-युगों तक पथदर्शन प्रदान करते रहें।'

परमाराध्य आचार्यवर ने अपने प्रथम मंगल वक्तव्य में कहा--'आर्हत वांग्मय का सुन्दर सूक्त है--'धम्मो मंगल मुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो।' धर्म उत्कृष्ट मंगल है, परम मंगल है। उससे बड़ा मंगल दुनिया में प्रतीत नहीं हो रहा है। जिसके पास धर्म है, उसके पास मानो मंगल ही मंगल है।

धर्म के तीन प्रकार बताए गए हैं--अहिंसा धर्म है, संयम धर्म है और तपस्या धर्म है। जिस आदमी के जीवन में धर्म होता है या धर्म जिसके मन में रम जाता है अथवा जिसका मन धर्म में रम जाता है, उसे मनुष्य ही क्या, देवता भी नमस्कार करते हैं।

जन्म लेना एक सामान्य घटना है। सामान्य घटना इसलिए है कि हर मनुष्य जन्म लेता है। मनुष्य ही नहीं, हर प्राणी संसार में जन्म लेता है। इसलिए इसमें कौन-सी विशेष बात है? परन्तु जन्म के बाद जीवनकाल में जो व्यक्ति वैशिष्ट्य को प्राप्त कर लेता है, उसके जन्मदिन को बड़े आदर के साथ, श्रद्धा के साथ लोग मनाते हैं। ऐसा ही कुछ मेरे साथ हो रहा है। जीवन के ५०वें वर्ष में मैंने आज प्रवेश किया है। लगभग शताब्दी का आधा भाग संपन्नता की ओर है।

मैं भगवान महावीर का स्मरण करता हूं, जो परम आराध्य, परम पूजनीय, प्रातःस्मरणीय हैं। मैं आचार्य भिक्षु की स्मृति करता हूं, जो महान क्रान्तिकारी, चिंतक, लेखक और सबसे बड़ी बात महान साधक संत हुए हैं। मैं परमपूज्य गुरुदेव तुलसी को श्रद्धा के साथ याद करता हूं। उनको तो मैंने साक्षात् देखा है और उनके चरणों में रहने का मुझे अवसर मिला है। परम उपकार उनका मेरे पर है। परम पूज्य गुरुदेव आचार्य महाप्रज्ञ का महान उपकार मेरे पर है। उन्होंने मुझे आगे बढ़ने का कितना मौका दिया और अपना सारा दायित्व विश्वास के साथ मुझे सौंप दिया। वे कहा करते थे--'मैं निश्चिंत हो गया।' ऐसे महान उपकारी परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी को श्रद्धा के साथ स्मरण करता हूं। मेरे पार्श्व में साध्वीप्रमुखाजी विराजमान हैं, बचपन से जिनका वात्सल्य प्राप्त हुआ और यदा-कदा जिनके परिपार्श्व में आने का मौका मिला। मेरे मन में उनके प्रति बहुत सम्मान का भाव है। मैं उन्हें सादर अभिवादन करता हूं। श्रद्धेय मंत्री मुनिश्री विराजमान हैं, जो मेरे परम उपकारी हैं और परमपूज्य गुरुदेव तुलसी की आज्ञा से जिन्होंने मुझे संसार से तारने का प्रयास किया है। मेरे मन में वैराग्य भाव निर्मित करने

और उसे पुष्ट करने का प्रयास किया, मुझे मुनि दीक्षा प्रदान की। आप मेरे दीक्षा प्रदाता मुनिवर हैं, जिन्होंने मुनि जीवन स्वीकार करने के बाद मेरा पालन-पोषण किया। मुझे शिक्षित और संस्कारित करने का प्रयास किया। ऐसे मुनिश्री को मैं वंदना करता हूं। मुख्य नियोजिकाजी बैठी हैं, जो आचार्यश्री के पास साहित्य के क्षेत्र में तथा अन्य विधाओं में बहुत श्रम करनेवाली थीं। उनका मुझे सहयोग प्राप्त है। उनको भी मैं प्रसन्नता के साथ निहार रहा हूं।

मुझे मेरी संसारपक्षीया मां याद आ रही हैं। मां नेमादेवी का सांसारिक उपकार मेरे पर है ही, परन्तु मैं मानता हूं उनका धार्मिक उपकार भी है। वे संसार में नहीं हैं। मैं उनको भी बड़ी भावना के साथ याद कर रहा हूं। इसी के साथ मैं अपने संसारपक्षीय पूज्य पिताश्री झूमरमलजी को याद करता हूं, जिनका साया मुझे स्वल्पकाल के लिए मिला, परन्तु उनका भी स्नेह मुझे प्राप्त हुआ। उनको भी मैं सद्भावना के साथ याद कर रहा हूं। सरदारशहर मेरी जन्मभूमि है, जहां में पला-पुसा, खेला-कूदा और धार्मिक साधना में आगे बढ़ने का संकल्प लिया। सरदारशहर की उस मातृभूमि को भी मैं आज याद कर रहा हूं।

मैंने सोचा है कि जन्मदिवस आया है तो मुझे कुछ निर्णय भी करने चाहिए। मैंने अपने विकास की दृष्टि से, कुछ मोड़ लेने की दृष्टि से कुछ निर्णय लिए हैं। वे विचार कुछ संकल्प के रूप में हैं, जो इस प्रकार हैं--

मैं अनिश्चित काल के लिए निर्णय करता हूं--

१. मैं प्रतिदिन विशेष स्थिति के सिवाय यथासंभव चौविहार नवकारसी करूंगा।

२. मैं विशेष स्थिति के सिवाय यथासंभव प्रथम प्रहर में अन्न ग्रहण नहीं करूंगा।

३. मैं वि शेष स्थिति के सिवाय यथासंभव प्रतिदिन तीन विगय का वर्जन करूंगा।

ये तीन तपः संबंधी संकल्प हैं। उसके बाद अब मैं जीवनशैली में मोड़ ला रहा हूं और व्यवहार से थोड़ा-सा उपरत होने का प्रयास करके कुछ निश्चय की दिशा में आगे बढ़ने तथा और ज्यादा महत्त्वपूर्ण कार्य करने की दृष्टि से मैंने कुछ सोचा है। वे भी अनिश्चित काल के लिए हैं।

४. मैं घरों-घरों, दुकानों-दुकानों और कारखानों-कारखानों में पगल्या करने की विधा का प्रयोग यथासंभव कम करने का प्रयास करूंगा।

५. मैं चतुर्मास में इक्कीस दिन तक की तपस्या के पारणे वालों के यथासंभव गोचरी नहीं जाऊंगा। इससे ऊपर की तपस्या के पारणे में गोचरी जा सकता हूं।

६. मैं चातुर्मास में साठ दिन से कम सेवा करने वालों के यथासंभव गोचरी नहीं करूंगा।

इन छह संकल्पों के बाद संकल्पों का सिरमौर है--

७. मैं यथासंभव उपशम की साधना का अभ्यास करूंगा।

मैंने ये सात संकल्प अपने लिए सोचे हैं, ताकि मेरे जीवन में कुछ मोड़ आए। आप लोग इतनी बड़ी संख्या में आए हैं, मेरा ५०वां जनमदिवस मनाने के लिए तो मैंने भी सोचा कि मुझे भी कुछ विचार करना चाहिए, संकल्प करना चाहिए। आप लोग आएं, न आएं, मुझे तो कुछ सोचना ही चाहिए। थोड़ा-सा आगे पादन्यास करने के लिए यह प्रयास किया।

आज के कार्यक्रम में अनेक संकल्पों के उपहार मेरे पास आए। अनेक केन्द्रीय संस्थाओं ने अपने संकल्प मेरे सामने अभिव्यक्त किए हैं और वास्तव में यह एक महत्त्वपूर्ण उपक्रम है संकल्पों का उपहार देना। मैं कल से ही देख रहा हूं कि कितने ही संकल्पों के उपहार मेरे पास आ रहे हैं, जो पवित्र और निरवद्य संकल्प हैं, उनके प्रति मेरी मंगलकामनाएं हैं। एक संकल्प या कार्यक्रम मैंने देखा अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल का और वह था जैन स्कॉलर परियोजना का। गुरुदेव तुलसी के समय से जैन विद्वान तैयार करने की जो बात विचारणीय है, मैं सोच रहा था कि उसी संदर्भ में यह उपक्रम आ गया। अ.भा. तेरापंथ महिला मंडल ने जैन स्कॉलर परियोजना को हाथ में लिया है, यह कार्य अपने

आप में महत्त्वपूर्ण है। मैं चाहता हूं यह कार्य विशेष रूप से आगे बढ़े और भी जो सारे पवित्र संकल्प हैं, उन सभी के प्रति मेरी मंगलकामना है। सभी अच्छे संकल्प साकार हों। एक वर्ष के लिए संकल्प लिए हों तो एक वर्ष पूरा होने को आए तो वापिस मुझे रिपोर्ट भी आपको देनी चाहिए कि जो संकल्प आपने मुझे उपहारस्वरूप दिए थे, उनकी प्रगति कितनी हुई या नहीं हुई? यह रिपोर्ट भी खास करके केन्द्रीय संस्थाओं की ओर से मेरे पास आनी चाहिए कि एक साल में स्वीकृत संकल्पों को आपने कितना आगे बढ़ाया है? संभव हो तो त्रैमासिक रिपोर्ट भी आप प्रस्तुत कर सकते हैं।

मैं अपने लिए मंगलकामना करता हूं कि मेरा जीवन अहिंसामय बने, संयममय बने, तपस्यामय बने और मैं अपनी आत्मा के कल्याण के साथ परकल्याण की दिशा में भी प्रयास करता रहूं।'

महामहिम राष्ट्रपति प्रतिभा देवीसिंह पाटिल की गरिमामय उपस्थिति

लगभग ९.५५ बजे भारत गणतंत्र की राष्ट्रपति प्रतिभा देवीसिंह पाटिल राजस्थान के राज्यपाल श्री शिवराज पाटिल आदि विशिष्ट अतिथियों के साथ मंच पर उपस्थित हुईं। मंच पर आते ही उन्होंने करबद्ध नतसिर आचार्यवर को सादर वंदन किया। राष्ट्रपतिजी के मंचासीन होने से पूर्व राष्ट्रगान हुआ। अमृत महोत्सव के संयोजक श्री ख्यालीलालजी तातेड़ ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। कार्यकर्ताओं द्वारा आगंतुक महानुभावों का साहित्य और स्मृतिचिह्न द्वारा सम्मान किया गया।

महासभा के अध्यक्ष श्री चैनरूप चंडालिया ने काष्ठ शिल्प की जीवंत कलाकृति वीणा आचार्यवर को उपहृत की। चंदन की लकड़ी से निर्मित वीणा के आकार वाली इस कलाकृति में आचार्यवर के महत्त्वपूर्ण जीवन-प्रसंगों को उत्कीर्ण किया गया है। आचार्यवर के इंगित पर चिंडालियाजी ने यह वीणा राष्ट्रपतिजी को दिखाते हुए उसके विषय में अवगति दी।

केन्द्रीय सड़क परिवहन राजमार्ग मंत्री डा.सी.पी.जोशी ने कहा--'आचार्यश्री के विचार देश में क्रान्ति लाएंगे। मुझे विश्वास है कि महाश्रमणजी का यह अमृत महोत्सव देश में नये युग का सूत्रपात करेगा और भारत को शक्तिशाली बनाने में उनकी कृपा और आशीर्वाद बना रहेगा।'

राजस्थान एवं पंजाब के राज्यपाल श्री शिवराज पाटिल ने कहा--'हम प्रार्थना करते हैं कि आचार्यश्री की आयु लम्बी हो, आरोग्य बहुत सुदृढ़ हो, समाज सुधार और जनकल्याण में आपका महत्त्वपूर्ण योगदान मिलता रहे और हम सब पर आपका आशीर्वाद बना रहे।'

महामहिम राष्ट्रपति प्रतिभा देवीसिंह पाटिल ने अपने भावपूर्ण भाषण में कहा--'आज मुझे आपके बीच आकर प्रसन्नता हो रही है। आचार्यश्री महाश्रमणजी एक महान आध्यात्मिक व्यक्तित्व, विचारक और समाज सुधारक हैं। वे अहिंसा, अनुकंपा, शान्ति और नैतिकता की प्रतिष्ठापना के द्वारा सामाजिक स्वस्थता के लिए अविरल और अविश्राम परिश्रम कर रहे हैं। आज उनके महान कार्य का आदर और सम्मान करने के लिए मैं यहां आई हूं। उन्हें आशीर्वाद देने का हक तो नहीं रखती हूं, लेकिन शुभकामनाएं जरूर दे सकती हूं। उन्होंने अहिंसा यात्रा के द्वारा देश के विभिन्न गांवों तथा शहरों का भ्रमण किया। लोगों के लोक कल्याण के बारे में जागृति लाई। आपने अपने प्रवचनों के द्वारा सामाजिक समरसता के महत्त्व को उजागर किया और सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लड़ने के लिए लोगों को प्रेरित किया।

यहां आदरणीय साधुगण और हमारी साध्वियां मौजूद हैं। मैं उन सबको प्रणाम करती हूं। आज जब हम अपने देश में एक ओर भ्रष्टाचार का वातावरण देख रहे हैं तो दूसरी ओर आध्यात्मिकता को लेकर समाज में जागरूकता लाने वाली ये महान हस्तियां भी कायम हैं। मैं समझती हूं कि यह देश के लिए बहुत सौभाग्य की बात है कि आप अपनी तपश्चर्या, कठिन व्रत और कठिन जीवन का आदर्श लोगों के सामने रखते हुए महानता आपने प्राप्त की है। लोगों को आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा देकर उनके चरित्र-निर्माण का काम आप कर रहे हैं। मैं समझती हूं कि हमारे लिए यह बहुत ही सौभाग्य की बात है।

सच देखा जाए तो समाज में अनाचार, दुराचार, व्यभिचार, कुप्रवृत्तियों, कुप्रथाओं तथा अन्याय का दमन कर उन्हें नष्ट कर सामाजिक सद्भाव का वातावरण निर्मित करना एक अतिशय महत्त्वपूर्ण और जरूरी बात है। जब हम हजारों-लाखों की संख्या में आचार्यश्री के विचार सुनने आते हैं तो उनसे प्रेरणा लेकर हमें यह नेक काम आरंभ करना, अपना नैतिक तथा सामाजिक कर्तव्य मानना चाहिए और खुद इसके लिए काम शुरू कर देना चाहिए। इसके लिए खुद साधु बनने की जरूरत नहीं। हर कोई साधु या साध्वी का जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। लेकिन साधु ने जो उपदेश दिया, उसका प्रचार-प्रसार करने में कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए।। हम गृहस्थाश्रम में रहते हुए भी अच्छी बातें समाज में कर सकते हें। यही प्रेरणा लेकर हम सबको यहां से जाना है।

भारत एक ऐसी प्राचीन भूमि हैं, जहां विश्व के अनेक धर्मों की उत्पत्ति हुई है। जैन धर्म भी उनमें से एक है। जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव से लेकर भगवान महावीर तक सभी तीर्थंकरों ने अच्छा मनुष्य बनने का मार्ग दिखाते हुए यह शिक्षा दी कि मनुष्य और प्राणियों का जीवन अमूल्य है और साथ में यह भी बताया कि हमें अपने कार्यों और व्यवहार में यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारे द्वारा किसी भी जीव को किसी भी प्रकार का कष्ट न पहुंचे। 'जीओ और जीने दो' का सिद्वान्त जैन धर्म की ही देन है। हमें इस सिद्धान्त को व्यवहार में उतारना चाहिए तथा सभी प्राणियों के प्रति करुणा, दया और सेवाभाव रखना बहुत जरूरी है। जैन धर्म में ऐसे ही एक श्लोक का अर्थ है--हे जिनेन्द्र ! मुझे बुद्धि दो कि मैं सभी प्राणियों से प्रेम करूं, सज्जनों से प्रसन्न रहूं, सभी दुखियों पर दया करूं और कलुषित जनों के प्रति सहिष्णुता रखूं।

इसी तरह हिन्दू धर्म में कहा गया है--

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःखभागभवेत् ॥

अर्थात केवल मनुष्य मात्र ही नहीं, प्राणिमात्र जिनमें जान है, वे सब सुखी हों। यह हमारे लिए बहुत बड़ी प्रेरणा है, शिक्षा है।

भारतीय संस्कृति का एक प्रमुख तत्त्व अहिंसा परमो धर्मः माना गया है। अर्थात अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है। अहिंसक परंपरा का उच्चतम रूप हमें जैन जीवन-दर्शन में देखने को मिलता है। जैन धर्म में सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चरित्र को त्रिरत्न के रूप में अंगीकार किया गया है। इसी प्रकार सम्यक् चरित्र के अन्तर्गत अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह--इन पांच व्रतों के पालन की शिक्षा दी गई है, जिनमें अहिंसा को सर्वोपरि स्थान दिया गया है। वास्तव में जैन परंपरा में अहिंसा जीवन की एक शैली है।

जब हम अहिंसा की बात करते हैं तो राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी का स्वतः ही स्मरण हो जाता है। उन्होंने सत्य व अहिंसा--इन दो प्रमुख सूत्रों के आधार पर भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का नेतृत्व किया। महात्मा गांधी ने जब सत्य और अहिंसा के सिद्वान्तों को आधार बनाकर स्वतंत्रता आन्दोलन प्रारंभ किया तो उस समय विश्व में किसी ने सोचा भी नहीं था कि हम इस मार्ग से आजादी प्राप्त करने में कामयाब हो सकते हैं। परन्तु उन्होंने दुनिया को दिखा दिया कि इन मूल्यों को आधार बनाकर ही स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं और यह बड़ी बात सामने आई कि इन तत्त्वों में कितना सामर्थ्य है। समाज में शान्ति की स्थापना करने और खुशहाली लाने में हमें अहिंसा के महत्त्व को कभी भी नहीं भुलाना चाहिए। गांधीजी की दृष्टि में अहिंसा कायरों का नहीं, बल्कि साहसी व्यक्ति का अस्त्र है। मैं हिंसा की राह पर चल रहे लोगों से आग्रह करूंगी कि वे इस राह को छोड़कर अहिंसा के मार्ग को अपनाएं। जिन्होंने भी हिंसा के मार्ग का अनुसरण किया है, मैं उनका आह्वान करना चाहूंगी कि अहिंसा के महत्त्व को समझिए, इसकी ताकत को समझिए और अहिंसा का मार्ग आप भी अपनाइए। लोकतंत्र में चर्चा और आपसी विमर्श के द्वारा समस्याओं का हल निकालना सही और महत्त्वपूर्ण रास्ता है। वर्तमान

विश्व परिदृश्य में शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व की बहुत आवश्यकता है। अहिंसा के महत्त्व को समझते हुए संयुक्त राष्ट्रसंघ ने राष्ट्रपिता महात्माजी के जनमदिवस २ अक्टूबर को अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मान्यता दी है, जो आज पूरी दुनिया ने माना है।

समाज में जो गरीबी, अज्ञान और सामाजिक कुरीतियां हैं, हमें उन्हें भी उखाड़ फेंकना होगा। नशाखोरी जैसी सामाजिक कुरीतियां और बुराइयां हमारे देश के विकास के लिए समस्याएं बनकर खड़ी हैं। नशाखोरी इन्सान की खुद की जिन्दगी को तो तबाह करती ही है, सारे कुटुम्ब की जिन्दगी को अस्तव्यस्त कर देती है। यह कहा जाता है--पहले इंसान दारू पीता है, गुटखा खाता है और फिर वही दारू उसको पी जाती है और गुटखा उसको खा जाता है। यह बहुत बड़ी समस्या है। इसके उन्मूलन के लिए समाज में जागरूकता लानी आवश्यक है। शराब और नशीले पदार्थों की लत युवाओं के लिए खतरा बनती जा रही है। इससे व्यक्तियों, परिवारों और समाज पर पड़ने वाले बुरे प्रभावों के बारे में भी मैं चिंतित हूं। इसके दुष्प्रभावों के बारे में जागरूकता लानी होगी और इसके लिए साधु-संतों को ही नहीं, हम सबको मिलकर सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने के कार्य को चुनौती के रूप में लेकर सामाजिक नजरिए और मानसिकता में बदलाव लाने के लिए कार्य करना होगा। मुझे यह जानकर विशेष प्रसन्नता हुई है कि इस महोत्सव में समाज के सर्वांगीण विकास के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं, जिनमें व्यसनमुक्ति अभियान चलाकर इन सामाजिक बुराइयों को दूर करने का प्रयास भी शामिल है। राष्ट्रीय चरित्र-निर्माण का काम हो रहा है, यह बहुत बड़ी बात है।

नशाखोरी के साथ-साथ बालिका भ्रूणहत्या जैसे निंदनीय कार्य भी समाज के लिए बहुत बड़ी समस्या हैं। बालिका भ्रूणहत्या हिंसा का एक वीभत्स रूप है। इसकी रोकथाम के लिए तत्काल कदम उठाए जाने की जरूरत है। बालिका एक बोझ है--यह मानसिकता वास्तव में दहेज के कारण पैदा हुई है। दहेज बालिकाओं को मार रहा है और प्रेम तथा स्नेह जैसी भावनाओं को समाप्त कर रहा है। अब समय आ गया है कि इस स्थिति में बदलाव हो और इस मुहिम में खासकर पुरुषों और महिलाओं को और युवकों को आगे आना होगा। इसके साथ ही मानवता के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए पर्यावरण और वृक्ष संरक्षण का काम भी अतिआवश्यक है। उम्मीद है कि आचार्यश्री से प्रेरणा लेकर आप सभी इस महत्त्वपूर्ण काम में प्रवृत्त होंगे।

आज जो बात बोली जाती है, समाज में हम उसे देख रहे हैं। भ्रष्टाचार की बात हो रही है, कदाचार की बात हो रही है, चरित्र निर्माण के अभाव में हमें ये सब दिखाई दे रहा है। अगर अच्छा समाज हमें निर्मित करना है तो चरित्र निर्माण के लिए भी काम करना होगा। अच्छे संस्कार अच्छे जीवन के लिए जरूरी हैं और चरित्र-निर्माण अच्छे व्यक्ति और अच्छे समाज के लिए जरूरी है। आप सबकी मेहनत से समाज में यह बदलाव आएगा, मनुष्य में बदलाव आएगा। लालच की भावना चाहे वह किसी भी प्रकार की हो, जब व्यक्ति के मन से निकल जाएगी और अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक होकर सद्भाव के साथ हर व्यक्ति काम करने लगेगा तो हमें जो बातें आज दिखाई दे रही हैं, वे खुद-ब-खुद कम होती दिखाई देंगी। इसके लिए जो काम आज महाश्रमणजी कर रहे हैं, मैं आपका सम्मान करती हूं। यह जागरूकता बहुत बड़ी बात है। केवल जैन समाज के लिए ही नहीं, पूरे समाज के लिए काम करने की जरूरत है। जहां-जहां लत है, जहां-जहां नशा है, जहां-जहां बेईमानी, भ्रष्टाचार और अनैतिकता है, ऐसी जगह हमें काम करना होगा। महाप्रज्ञजी से मैं कई बार मिली हूं। उनसे चर्चा करने का भी सौभाग्य मिला और मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि महाश्रमणजी उन्हीं का कार्य लेकर आगे चल रहे हैं। मैंने सोचा कि मैं भी जाकर आपके बीच शामिल होऊं। मुझे यह जानकर बहुत खुशी है कि अत्यन्त उत्कृष्ट, अत्यन्त पवित्र, अत्यन्त निर्मल, अत्यन्त विधायक और अत्यन्त आवश्यक काम के लिए आप सब यहां आए हैं। यहां से प्रेरणा और सद्भावना लेकर हमें समाज के हर तबके के लिए काम करना है।

हमारे देश में जो गरीबी, भूख और अस्वस्थता है, उसको भी मिटाना है और यह हम सबकी जिम्मेदारी है। इसलिए में आप सबसे आह्वान करूंगी कि बहुत अच्छा मौका है, अच्छा क्षण है। हम यहां से प्रेरित होकर समाज के लिए, अपने जीवन के लिए कुछ क्षण देकर अच्छा काम कर पाएं तो मैं आप सबके लिए मैं यही कहूंगी कि मुझे यहां आकर बहुत प्रसन्नता हुई और मुझे विश्वास है कि आचार्यजी के प्रयत्नों से विश्व में शान्तिपूर्ण समाज के निर्माण में मदद मिलेगी। अमृत महोत्सव की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं और सभी उपस्थित लोगों के सफल भविष्य के लिए मंगलकामनाएं।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने द्वितीय मंगल उद्बोधन में कहा--'आर्हत वांग्मय का एक सुन्दर सूक्त है--'सच्चं भयवं।' सत्य भगवान है। जो व्यक्ति अपने जीवन में सचाई की आराधना करता है, वह व्यक्ति भगवान की आराधना कर लेता है। मानव बनना बहुत बड़ी बात नहीं, परन्तु जीवन में सचाई की साधना करना बहुत बड़ी बात हो जाती है।

जन्म लेना सामान्य बात है, परन्तु जीवन में विशिष्ट कार्य करना विशेष बात हो जाती है। आज मैंने अपने जीवन के ५०वें वर्ष में प्रवेश किया है। इस संदर्भ में धर्मसंघ ने अमृत महोत्सव मनाने का प्रस्ताव रखा। उसकी मैंने स्वीकृति भी प्रदान कर दी। आज के इस अवसर पर भारत की राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल का आना मैं अपने प्रति उनकी सद्भावना का प्रतीक मानता हूं।

परम पूज्य गुरुदेव आचार्य महाप्रज्ञ ने संभवतः एक बार कहा था कि विकास का चतुष्कोण है। विकास के चार प्रकार हैं--आर्थिक विकास, भौतिक विकास, नैतिक विकास और आध्यामिक विकास। भौतिक संसाधनों की भी अपेक्षा होती है और उस विकास के लिए आर्थिक विकास भी आवश्यक होता है। भौतिक और आर्थिक विकास एक अपेक्षा की पूर्ति है। परन्तु इतने मात्र से ही विकास की परिपूर्णता नहीं होती। विकास की परिपूर्णता के लिए दो विकास और वांछनीय हैं। वे हैं--नैतिक और आध्यात्मिक विकास। देश की जनता में नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठा रहे। जैसा अभी राज्यपाल महोदय ने कहा कि गुरुदेव तुलसी, जिन्होंने अणुव्रत की बात कही थी और अणुव्रत के लिए उन्होंने कितना परिश्रम किया था। जन-जन के मन में नैतिकता के प्रति निष्ठा बढ़े, ऐसा उन्होंने प्रयास किया था। नैतिक मूल्यों का विकास आवश्यक है, उससे भी आगे बढ़ें तो आध्यात्मिक विकास, चेतना का विकास, आत्मा की निर्मलता का विकास वांछनीय है। ये चारों विकास होते हैं तो एक संतुलित विकास और पूर्ण विकास हो रहा है--ऐसा माना जा सकता है।

मैं अपने बारे में कहूं--मुझे मानव बनने का मौका मिला, उसके साथ-साथ तेरापंथ शासन, भैक्षव शासन में दीक्षित होने का अवसर मिला। आचार्य भिक्षु का यह शासन मिला और इस शासन का दायित्व भी मुख्यतया मेरे पर आ गया। मैं सबसे पहले अपने आपको तेरापंथ शासन की सेवा के लिए समर्पित मानता हूं। बाद मैं आगे चलूं तो मैं जैन शासन की सेवा करना चाहता हूं और उसके साथ मैं यथासंभव, यथाशक्ति यत्किंचित मानव जाति की सेवा करना चाहता हूं।

अभी हम लोग अहिंसा यात्रा कर रहे हैं। अहिंसा यात्रा का मुख लक्ष्य है--अनुकंपा की चेतना का विकास। जन-जन में करुणा की भावना जागे। जिसमें दया की भावना जाग जाती है, वह व्यक्ति अपराधों से अपने आपको बचा लेता है। अनुकंपा की चेतना के विकास के तहत हमने चार सूत्र निर्धारित किए हैं, जिनमें पहला है--साम्प्रदायिक सौमनस्य। भारत में विभिन्न सम्प्रदाय हैं। उन सम्प्रदायों में परस्पर सौमनस्य रहे, सद्भावना रहे, ऐसी प्रेरणा देने का यथासंभव प्रयास किया जा रहा है।

दूसरा सूत्र है--नशामुक्ति। लोग नशे की बुराई से मुक्त रहें, ऐसा प्रयास किया जा रहा है। अनेक-अनेक लोगों ने हमारे पास नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया है। हम उसके लिए प्रयास भी कर रहे हैं।

तीसरी बात--कन्या भ्रूणहत्या निरोध। कहीं-कहीं कन्या भ्रूणहत्या का स्वर भी आता है। हम उसके लिए भी प्रेरणा दे रहे हैं कि कन्या भ्रूणहत्या जैसा घिनौना कृत्य नहीं होना चाहिए।

चौथा सूत्र है--यथासंभव ईमानदारी का पालन। अपने जीवन में लोग ईमानदारी को महत्त्व दें और

जहां तक बन सके, ईमानदारी के रास्ते पर चलें। थोड़ा कष्ट आ जाए तो उसे स्वीकार कर लें, परन्तु ईमानदारी को न छोड़ें। ईमानदारी के पथ पर आगे बढ़ते रहें।

इस प्रकार अहिंसा यात्रा के माध्यम से कुछ काम किया जा रहा है। मैंने मेवाड़ की जनता के लिए कहा कि पारिवारिक सौमनस्य को प्रमुखता दें। परिवारों में सौहार्द और मैत्रीभाव रहे, ऐसा यथासंभव प्रयास कर रहे हैं। मैं अपने लिए मंगलकामना करता हूं कि मेरा जीवन अध्यात्ममय हो। मैं स्वयं आत्मसाधना करता हुआ दूसरों की भी सेवा कर सकूं, यह मेरी भावना है। जीवन की यह अर्धशताब्दी का लगभग संपन्नता का अवसर है। मैं हमेशा अध्यात्म भावना और सेवाभावना के प्रति जागरूक रहूं, समर्पित रहूं। सम्मानित मंच के प्रति भी मेरी मंगलभावना है। आप लोग यहां पहुंचे हैं, यह आप सबकी सद्भावना है। हम सब कल्याण की दिशा में काम करते रहें, यह हमारे लिए मंगलकारी हो सकेगा।'

अमृत महोत्सव के स्थानीय संयोजक श्री धर्मेश डांगी ने आभार व्यक्त किया। राष्ट्रगान के द्वारा कार्यक्रम परिसंपन्न हुआ। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि मोहजीतकुमारजी ने किया।

आपके हाथों से बड़े-बड़े काम होंगें

कार्यक्रम के पश्चात मंच के पीछे की ओर निर्मित 'ग्रीन रूम' में पूज्य आचार्यप्रवर एवं राष्ट्रपतिजी के बीच वार्तालाप हुआ। इस वार्तालाप में मंत्री मुनि सुमेरमलजी ने आचार्यवर के बचपन के विषय में अवगति दी और कहा--'भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसादजी से लेकर आप तक सभी राष्ट्राध्यक्षों का हमारे आचार्यों से संपर्क रहा है।' साध्वीप्रमुखाजी ने कहा--'डॉ. राजेन्द्रप्रसादजी ने गुरुदेव तुलसी से निवेदन किया था कि आप मुझे कोई पद देना चाहें तो 'अणुव्रत समर्थक' का पद दें। गुरुदेव ने उनसे कहा--'हम आपको 'अणुव्रती का पद देंगे।' मुनि कुमारश्रमणजी ने गुरुदेव तुलसी की जन्मशताब्दी के संदर्भ में सन २०१४ में होने वाले आचार्यवर के दिल्ली चातुर्मास की अवगति दी।

पूज्य आचार्यवर ने महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि का परिचय कराया और कहा--'गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ ने नैतिकता और अहिंसा की प्रतिष्ठापना के लिए जो कार्य किया, वही कार्य हम आगे बढ़ा रहे हैं।'

राष्ट्रपतिजी ने आचार्यवर से कहा--'आने वाले समय में आपके हाथों से बहुत बड़े-बड़े काम होंगे।' मुनि कुमारश्रमणजी बोले--'राष्ट्रपतिजी ने भविष्यवाणी कर दी है।' इस पर राष्ट्रपतिजी बोलीं--'वो तो है ही। आचार्यश्री मानवता के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं तो आपके हाथों से बड़े-बड़े कार्य होने ही हैं।' वार्तालाप के दौरान इसके अतिरिक्त भी विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई। राष्ट्रपतिजी ने आचार्य महाप्रज्ञ के साथ समय-समय पर हुई भेंटों का भी स्मरण किया।

आचार्य महाश्रमण डायलिसिस सेन्टर का उद्घाटन

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में कांकरोली के आर.के.हास्पिटल में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा धानीन निवासी मुम्बई प्रवासी श्री सोहनलाल चोरड़िया द्वारा निर्मित आचार्य महाश्रमण डायलिसिस सेन्टर का उद्घाटन ११ मई को समणी निर्वाणप्रज्ञाजी से मंगलपाठ सुनकर जिला कलक्टर श्री बी. यशवंत ने किया। यशवंतजी ने बताया कि पूरे राजस्थान में जिला स्तर का यह प्रथम डायलिसिस सेन्टर है।

विशाल निःशुल्क चिकित्सा शिविर

प्रज्ञा विहार कांकरोली में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के तत्त्वावधान में अमृत महोत्सव आयोजना के उपलक्ष्य में दोदिवसीय निःशुल्क चिकित्सा परामर्श एवं रोग परीक्षण शिविर का आयोजन हुआ। शिशोदा निवासी, मुम्बई प्रवासी श्री सोहनलाल मेघराज धाकड़ के प्रायोजकत्व में संपन्न इस शिविर में कॉर्डियोलोजी,

जनरल फिजिशियन, डायबिटीज, आर्थोपेडिक, फिजियोथेरेपी, डेन्टल, आंख आदि से संबंधित १६०० लोगों की जांच की गई। ५४० आंख के मरीजों को चश्मे वितरित किए गए। ५५ मरीजों की इको व ७० की ई.सी.जी.जांच की गई। फोरम से जुड़े अनेक डॉक्टरों ने इस शिविर में अपनी निःशुल्क सेवाएं दीं। शिविर संयोजक डॉ. विमल काबड़िया व सहसंयोजक श्री नवीन चोरड़िया ने बताया--श्रीनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ नर्सिंग कालेज के २५ छात्र-छात्राओं ने इस शिविर में अपनी सेवाएं दीं। स्थानीय युवकों ने भी निष्ठा से अपना दायित्व निभाया।

अमृत महोत्सव की पूर्व संन्ध्या पर शानदार सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति

११ मई को रात्रि में अमृत महोत्सव की पूर्व संध्या पर दो आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। सर्वप्रथम मुम्बई की ५८ ज्ञानशालाओं के बच्चों ने संयुक्त रूप से रोचक कार्यक्रमों को प्रस्तुति दी। उसके बाद अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की आकर्षक प्रस्तुति हुई, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों की बहनों ने चित्तसमाधि, संयम व पारिवारिक सौहार्द पर आधारित प्रभावी नाटिकाओं का मंचन किया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती सूरज बरड़िया ने किया। इस कार्यक्रम में मंडल की अध्यक्ष श्रीमती कनक बरमेचा और मंत्री वीणा बैद के नेतृत्व में मंडल के पदाधिकारियों ने भावपूर्ण गीत भी प्रस्तुत किया। प्रस्तुति में अच्छी तैयारी का प्रभाव था।

ज्ञानशाला स्पेशल धाकड़ एक्सप्रेस

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा मुम्बई के तत्त्वावधान एवं श्रीमती लेहरीबाई हमेरलाल धाकड़ ट्रस्ट मुम्बई के प्रायोजकत्व में ज्ञानशाला के बच्चों को लेकर स्पेशल ट्रेन पहली बार तेरापंथ के किसी आयोजन हेतु पहुंची १८ कोच वाली इस ज्ञानशाला स्पेशल धाकड़ एक्सप्रेस में मुम्बई क्षेत्र की ५८ ज्ञानशालाओं के १००८ चयनित ज्ञानार्थी, २५० प्रशिक्षक, २०० पदाधिकारी व अन्य विशिष्ट जन सहित कुल १४५८ लोग थे। ११ मई को मध्याह्न में आचार्यवर ने सबको विशेष समय प्रदान किया। ज्ञानशाला के बच्चों ने गीत प्रस्तुत किया। ज्ञानशाला के प्रभारी मुनि उदितकुमारजी, सहप्रभारी मुनि हिमांशुकुमारजी ने ज्ञानशाला के संदर्भ में अपने विचार रखे।

रात्रि में आचार्यवर की सन्निधि में ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने फूलों और तारों का आवरण लेकर गीत, महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी द्वारा रचित 'महाश्रमण अष्टकम', कव्वाली और नाटिका आदि के माध्यम से प्रभावी मंचन किया। तेरापंथी सभा मुम्बई के मंत्री श्री रमेश सुतरिया, ज्ञानशाला की आंचलिक संयोजिका श्रीमती निर्मला चिंडालिया ने मुम्बई की ज्ञानशालाओं की समुचित जानकारी दी। कई बच्चों ने अपनी हस्तनिर्मित कृतियां भेंट कीं।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने कहा--'संस्कार-निर्माण की प्रयोगशाला है ज्ञानशाला। मुम्बई ज्ञानशाला का अच्छा विस्तार और विकास हुआ है। यहां जो प्रस्तुति दी गई, उसे देखकर लगता है कि अच्छी तैयारी की गई है। सभी लोग ज्ञानशाला के महत्त्व को समझें।' प्रायोजक शासनसेवी श्री रमेश धाकड़ ने अपने उद्गार व्यक्त किए। ज्ञानशाला की यह स्पेशल ट्रेन सबके आकर्षण का केन्द्र बनी रही।

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव एक्सप्रेस

हरियाणा प्रान्तीय तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में अध्यक्ष व मुख्य प्रायोजक श्री रघुवीर जैन मारबल टी कार्याध्यक्ष श्री घीसाराम जैन एवं महामंत्री श्री नंदकुमार जैन के नेतृत्व में, श्री सुरेन्द्र जैन एडवोकेट के संयोजकत्व एवं प्रमोदकुमार जैन के सहसंयोजकत्व में एक स्पेशल ट्रेन 'आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव एक्सप्रेस' सिरसा से हिसार, भिवानी होते हुए मेवाड़ पहुंची। फोटो, स्टीकर, जैन ध्वज आदि से सुसज्जित इस ट्रेन से आठ समणीजी ने भी यात्रा की। जैन ध्वज के पांच रंगों के पट्टे पहने यात्रियों ने 'गुरुवर

को देने बधाई : स्पेशल ट्रेन है आई' गीत से वातावरण को हरियाणामय बना दिया। हरियाणा के छोटे-बड़े २७ क्षेत्रों के १२०० यात्रियों की ओर से संकल्प पत्रों से भरे अमृत कलश के रूप में श्रीचरणों में त्यागमयी भेंट प्रस्तुत की गई। आचार्यवर ने हरियाणावासियों को सेवा-उपासना का विशेष अवसर प्रदान किया। पट्टोत्सव कार्यक्रम में हरियाणा की ओर से श्री नंदकुमार जैन ने अपने विचार रखे। हरियाणा की यह स्पेशल ट्रेन अमृत महोत्सव प्रसंग में स्मरणीय बन गई। दो दिनों तक कांकरोली और राजनगर में हरियाणावासियों ने दर्शन-सेवा का भरपूर लाभ उठाया।

अन्य उपक्रम

११ मई को प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में प्रकाशित 'साधना पथ' पत्रिका का विशेषांक श्री इन्द्र बेंगानी एवं संजय खटेड़ ने श्रीचरणों में उपहृत किया। युवादृष्टि और तेरापंथ टाइम्स के विशेषांक अ.भा.तेयुप के अध्यक्ष श्री गौतम डागा एवं महामंत्री रमेश सुतरिया ने समर्पित किया। मुनि सुरेशकुमारजी ने 'उजली चादर : उजला जीवन' नामक मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुमन' का जीवनवृत्त पूज्यवर को भेंट किया। मुनि दर्शनकुमारजी ने हस्तनिर्मित कलाकृति भेंट की।

१० मई को साध्वी लक्ष्मीकुमारीजी ने गुरुदर्शन किए। आचार्यवर ने उनके संदर्भ में कहा--'साध्वी लक्ष्मीकुमारीजी श्रमशील व अच्छा काम करने वाली साध्वी हैं। इन वर्षों में मेवाड़ में ही विचरण कर रही हैं।'

१२ मई को रात्रि में मंगलभावना समारोह का उपक्रम रहा। कार्यकर्ताओं का सम्मान भी किया गया। स्थानीय जनता के अनुरोध पर आचार्यवर ने मुनिश्री सुरेशकुमारजी का चातुर्मास कांकरोली घोषित किया। ११ मई की शाम को पूज्य आचार्यवर ने स्थानीय परिवारों को सेवा करवाई और उन्हें धार्मिक प्रेरणा प्रदान की।

'शान्तिदूत' आचार्यश्री महाश्रमण

उदयपुर की पेसिफिक युनिवर्सिटी ने परम पावन आचार्यवर को 'शान्तिदूत' अलंकरण समर्पित करने की घोषणा की है। यूनिवर्सिटी के सचिव श्री राहुल अग्रवाल और वाइस चांसलर श्री बी. एल. शर्मा उदयपुर निवासी श्री राजकुमार फतावत के साथ श्रीचरणों में उपस्थित हुए और पूज्यवर को संस्थान के इस निर्णय की अवगति दी। २९ मई को उदयपुर में यह अलंकरण परमपूज्य आचार्यवर को समर्पित किया जाएगा।

आचार्य महाश्रमण पदाभिषेक समारोह का आयोजन

१३ मई, वैशाख शुक्ला दसमी। जन-जन की आस्था के आस्थान, जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण के पदाभिषेक के द्वितीय वर्ष प्रवेश पर भव्य अभिवंदना समारोह का आयोजन। पश्चिम रात्रि में संतों के द्वारा अभिवंदना में गीत प्रस्तुत किया गया। सूर्योदय के बाद साध्वियों ने सामूहिक भावपूर्ण गीत प्रस्तुत किया।

प्रातः प्रज्ञा विहार कांकरोली से विहार कर आचार्यप्रवर केलवा चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री महेन्द्र कोठारी के १००फीट रोड आवास पर पधारे। संक्षिप्त कार्यक्रम में श्री महेन्द्र कोठारी एवं श्री बाबूलाल कोठारी ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने संक्षिप्त प्रवचन में कहा--'महेन्द्र काफी उत्साही लग रहा है। पूरी टीम के सामने केलवा चतुर्मास का विशाल कार्य है। केलवा छोटा क्षेत्र है, किन्तु उत्साह, अनुकूलता और योजनाबद्ध कार्य हो तो सारी व्यवस्थाएं संपन्न हो सकती हैं।'

संक्षिप्त प्रवास और प्रवचन कर पूज्यवर गांधी सेवा सदन में पधारे। वहां आयोजित पट्टोत्सव समारोह

का शुभारंभ पूज्यवर के मंगल महामंत्रोच्चार से हुआ। मेवाड़ की साध्वियों, मुमुक्षु परिवार, समणीवृन्द एवं मुनि सुरेशकुमारजी ने गीत का संगान किया। मुनि किशनलालजी, मुनि प्रसन्नकुमारजी, साध्वी जिनप्रभाजी, साध्वी प्रज्ञाश्रीजी, समणी प्रतिभाप्रज्ञाजी ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। शासन गौरव मुनि धनंजयकुमारजी ने कविता प्रस्तुत की। जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी ने अपनी मंगलभावना व्यक्त की। समणीवृन्द ने 'प्रज्ञा इंन्स्टीट्यूट' नामक रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। मुनि सुखलालजी ने भिक्षु वांग्मय के अंतर्गत नवप्रकाशित 'भरत चरित्र' के संदर्भ में जानकारी देते हुए उसे पूज्यवर को उपहृत किया। महासभा की ओर से अध्यक्ष श्री चैनरूप चिंडालिया तथा सरदारशहर की ओर से श्री डालचन्दजी चिंडालिया आदि ने अभिनंदन पत्र भेंट किया।

गांधी सेवा सदन की ओर से बच्चों द्वारा प्रस्तुत गीत के बाद श्री गुणसागर कर्णावट ने अतिथियों का स्वागत किया। कवि माधव दरक एवं कवि अब्दुल जब्बार ने भावपूर्ण कविता प्रस्तुत की। राजसमन्द, दिवेर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, रीछेड़ आदि क्षेत्रों की ओर से १८५७० नशामुक्ति संकल्प पत्र भेंट किए गए। 'स्मृतियों के वातायन' पुस्तक का परिचय डा.महेन्द्र कर्णावट ने दिया। श्री बी.एन.पांडेय एवं श्री जुगराज नाहर ने पुस्तक आचार्यवर को भेंट की। भिक्षु बोधिस्थल के अध्यक्ष श्री गणपत धर्मावत आदि ने अभिनंदन पत्र भेंट किया। अणुव्रत पाक्षिक का महाश्रमण अंक श्री जी. एल. नाहर ने एवं अंशुल श्रीश्रीमाल ने चित्रकृति भेंट की। बालिका कृति कर्णावट ने भी अपनी भावनाएं रखीं।

मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी ने आचार्यवर को वर्धापित किया। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने आचार्यवर की एक वर्ष की धर्मशासना के संदर्भ में एक सुन्दर कविता प्रस्तुत की, जिसे आप आगामी विज्ञप्ति में पढ़ सकेंगे।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'वैशाख शुक्ला दसमी का दिन प्रभु महावीर का कैवल्य कल्याणक दिवस है। मेरे जीवन के साथ भी यह दिन जुड़ गया। मानो प्रभु की आराधना का अनायास अवसर मिल गया। कल मेरा जन्मदिन था। एक अपेक्षा से आज भी मेरा जन्मदिवस है। इसका पहला आधार है कि ईस्वी सन के अनुसार मेरा जन्म १३ मई अर्थात आज के दिन ही हुआ। दूसरा आधार है आज से एक वर्ष पूर्व धर्मसंघ ने मुझे दायित्व की चादर ओढ़ाई थी। वह मेरा पुनर्जन्म था।'

परम पूज्यवर ने अपने वक्तव्य में गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के महान उपकारों का भी स्मरण किया और प्रशासनिक कार्यों में मिल रहे साध्वीप्रमुखाजी, मुख्यनियोजिकाजी के महनीय सहयोग का भी उल्लेख किया। इसी प्रकार मंत्री मुनिश्री की चिंतनशीलता और अनुभवप्रवणता के संदर्भ में भी उद्‌गार व्यक्त करते हुए साधु-साध्वियों के सहयोग की प्रशंसा की।

आचार्यवर ने आगे कहा--'मैं सर्वप्रथम तेरापंथ संघ, भैक्षव शासन को महत्त्वपूर्ण मानता हूं। मैं उसके प्रति सर्वात्मना समर्पित हूं। यह मेरा सौभाग्य है कि ऐसा सुव्यवस्थित धर्मसंघ मिला और उसके नेतृत्व का भी सुअवसर मुझे प्राप्त है।' समणश्रेणी द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'प्रज्ञा इंस्टीट्यूट के इस कार्यक्रम में बातें आधुनिक हैं, किन्तु कार्य महत्त्वपूर्ण है। समण श्रेणी स्वस्थता और प्रसन्नता के साथ खूब अच्छा कार्य करती रहे।' भिक्षु वांग्मय के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'आचार्य महाप्रज्ञ ने मुझे भिक्षु साहित्य के संपादन का दायित्व सौंपा। उसका दूसरा ग्रंथ 'भरत चरित' प्रकाश में आया है। इस कार्य में मुनिश्री सुखलालजी का श्रम रहा है। मुनिश्री विद्वान और मनीषी संत हैं। समग्र भिक्षु वांग्मय के संपादन में भी आपका सहयोग प्राप्त है। युवा संत मुनि कीर्तिकुमारजी भी जागरूकता और निष्ठा के साथ इस कार्य से पूरे जुड़े हुए हैं।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'मुनि विश्रुतकुमारजी ने पदाभिषेक के संदर्भ में एक सुन्दर कृति उपहार में दी। ये मेधावी, तार्किक, बौद्धिक और श्रमशील मुनि हैं। हमारी सेवा, साहित्य आदि अनेक कार्यों से जुड़े हुए हैं।' इस अवसर पर आचार्यवर ने अनेक श्रावक-श्राविकाओं की सेवाओं का मूल्यांकन करते हुए उन्हें विशिष्ट संबोधन से संबोधित किया। उसकी सूची देखें आगामी विज्ञप्ति में। पदाभिषेक के